Introduction

भूमिका

आधुनिक हिन्दी साहित्य गद्य विकास के साथ नई–नई पद्य–विधाओं के आगमन के लिए चर्चित है। यथार्थ के स्वाभाविक धरातल पर मनोरम प्राकृतिक दृश्य और उसमे विकसित होता हुआ आध्यात्म, इसे मनमोहक और अनुप्रेरक रंग प्रदान करता रहा है। स्नातक स्तर के अध्ययन के समय से ही प्रसाद, पन्त, निराला आदि आधुनिक कवियों के काव्य में रूचि बढ गई तथा इनकी कई कविताएँ मुझे कण्ठस्थ भी थी। स्नातकोत्तर के अध्ययन के दौरान मुझे 'ऑधी और चॉदनी' पढने का मौका मिला तभी से 'तरुण' जी का नाम मन–मस्तिष्क मे अंकित हो गया। रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरुण' की रचनाएँ मन की प्यास को बुझाने का कार्य करती है। शायद इसी भाव ने मेरी चेतना को 'तरुण' काव्य के प्रति आकृष्ट करके उसके शोध–स्तर पर गहन अध्ययन के लिए प्रेरित किया।

रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरुण' और उनका गीत–काव्य' नामक इस शोध–प्रवन्ध के पहले अध्याय मे 'तरुण' के वैविध्यपूर्ण जीवन–वृत्त का उल्लेख है। दूसरे अध्याय में उनके अब तक प्रकाशित सभी काव्य–संग्रहो– 'प्रथम किरण', 'धूपदीप', 'हिमांचला', 'ऑधी और चॉदनी', 'हम शिल्पी संत्रास के' तथा 'यह लो मेरे हस्ताक्षर' आदि की विस्तार–पूर्वक परिचयात्मक विश्लेषण किया गया है।

अध्याय तीन के अन्तर्गत काव्यात्मक समीक्षा को प्रस्तुत किया गया है। 'तरुण' जी को मानव–से अत्याधिक लगाव रहा है जिससे कही तो उनके काव्य मे संत्रास के स्वर है तो कही सवेदनाएँ प्रकट हो रही है। एक तरफ व्यष्टि और समष्टि की पीडाएँ उन्हे परेशान करती है तो दूसरी तरफ राजनीति का कलुषित परिवेश उन्हे व्यथित करता है। राष्ट्र, समाज से उन्हें अत्याधिक लगाव है। इन्ही सब विस्तृत समीक्षा यहॉ उद्‌घृत है।

उनके गीतो का मूल स्वर जीवन्त आस्थाएँ, अजेय स्वर और दृढ़ सकल्प धर्मिता है जो अध्याय चार मे संकलित है। जबकि पॉचवे अध्याय में रस, राग और रग व प्रकृति से प्रेम परिलक्षित होता है। छठे अध्याय में 'तरुण' के गीतों में निहित जीवन दर्शन व आध्यात्मिक चिन्तन पर प्रकाश डाला है। सातवें अध्याय में 'तरुण' का आधुनिक काव्य–परम्परा में स्थान तथा आठवें अध्याय में शिल्प पक्ष पर रोशनी डाली गई है।

शोध–प्रबन्ध का अध्ययन शुरू करने पर मेरा जब कई वरिष्ठ अध्यापकों से सम्पर्क स्थापित हुआ तो उनसे पता चला कि मैं जब 'तरुण' जी से मिलूगी तो मुझे अहसास होगा कि वे कविता में सोचते है, कविता में बोलते हैं और कविता में ही जीते हैं। कविता उनके लिए जीवन की सच्ची भाषा है, उनकी जीवनी शक्ति है। वे बात करते–करते बहुत गहरे मे उतर जाते हैं और सहज रूप से जीवन के गहरे और दीर्घकालीन संघर्ष से जुड जाते हैं।

पर यह एक दुखद कारुणिक योग रहा कि जिस समय (यानि जुलाई सन् 1997 में) मैंने यह शोध कार्य प्रारम्भ किया उसके कुछ समय पश्चात् (2 फरवरी 1998को)'तरुण' जी देवलोक पधार गये और मुझे उनसे रू–ब–रू होने का एक मौका तक न मिल सका।

'तरुण' जी की अर्धांगिनी–स्नेहमयी माताजी श्रीमती कान्तिबाला खण्डेलवाल से जब मैं शोधकार्य के दौरान मिली, तब उनकी स्वागत सत्कार–युक्त निश्छल मुसकानमयी छवि में एक आदर्श मॉ का स्नेह और दुलार सहज सुलभ रहा जिससे उनके समक्ष नत मस्तक होना चाहता है।